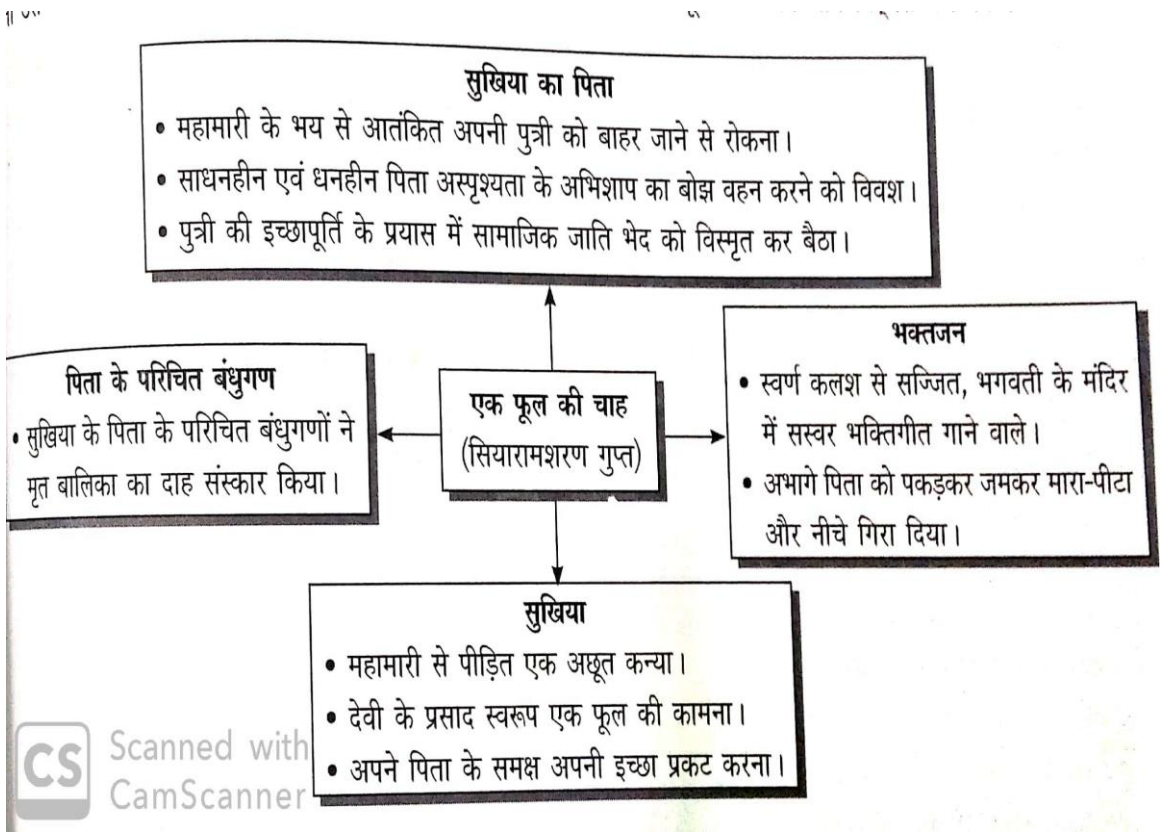


एक फूल की चाह



सियारामशरण गुप्त



(ख) बीमार बच्ची ने क्या इच्छा प्रकट की?

उत्तर बीमार बच्ची ने यह इच्छा प्रकट की थी कि उसके पिता उसके लिए देवी के प्रसाद का एक फूल ही लाकर दे दें।

(ग) सुखिया के पिता पर कौन-सा आरोप लगाकर उसे दंडित किया गया?

उत्तर सुखिया के पिता पर मंदिर की शुचिता को दूषित करने का आरोप लगाते हुए उसे दंडित किया गया था क्योंकि वह अछूत था।

(घ) जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने अपनी बच्ची को किस रूप में पाया?

अथवा

सुखिया के पिता को क्या सजा मिली? सजा काटने के बाद उसने अपनी बेटी को कहाँ और किस रूप में पाया?

[CBSE 2011]

उत्तर सुखिया के पिता को सात दिनों के कारावास की सजा मिली। सात दिनों का कारावास काटने के बाद सुखिया का पिता जब जेल से छूटा तो घर पहुँचने पर अपनी कुटिया को पुत्री सुखिया से रहित पाया क्योंकि महामारी में वह अपना जीवन खो चुकी थी। उसे देखने की लालसा में जब सुखिया का पिता श्मशान पहुँचा तो उसने उसे राख की ढेरी के रूप में पाया।

(ङ) इस कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर महात्मा गांधी के विचारों से पूर्णतः प्रभावित कवि ने उस युग की समस्या छूआछूत को एक हृदयस्पर्शी कथानक के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। महामारी के प्रकोप से ग्रस्त अछूत कन्या के मन में देवी के प्रसाद रूप में एक पुष्प पाने की चाह उठी। उसने अपनी इच्छा अपने पिता से कही। पिता उसे बीमार देख अज्ञात भय की आशंका से त्रस्त हो बेटी की कामना पूर्ति के लिए देवी के मंदिर तक जा पहुँचा, दीप-फूल अंबा को अर्पित करके प्रसाद प्राप्ति की कामना से प्रतीक्षा करने लगा। पुजारी ने भी देने में प्रसाद दिया तो पुत्री की इच्छा पूर्ति की भावना को ध्यान में रखते हुए वह प्रसाद छोड़ केवल पुष्प ग्रहण करके, आँगन पार करके सिंह द्वार तक पहुँचा ही था कि अछूत के रूप में पहचान लिए जाने पर मंदिर के भक्तों द्वारा लाञ्छित किया गया। मंदिर की पवित्रता को दूषित करने के अपराध में उसे सात दिनों तक कारागार में रहना पड़ा। कारागार में बीतते-बीतते ये पल कुछ इतने लंबे इतने विकराल थे कि उनके पश्चात वह अभागा पिता अपनी पुत्री सुखिया को जीवित न देख पाया। उसके परिचित संबंधियों ने उसका अंतिम संस्कार कर दिया था।



Scanned with
CamScanner